# साहूकार बडे हैं

खेत किसानों के, हल बैल किसानों के |
थे खूब कभी लगते खेल किसानों के |

साहूकार बडे हैं बैंक हुए कितने,
नायब लाये कुर्की-मेल किसानों के |
खेत हुये नीलाम बचा कुछ मूल अभी,
चिंता में छप्पर खपरैल किसानों के |
हक मांगा तो खूब किये है हाकिम ने,
नाम जिले के थाने जेल किसानों के |

खूब चला कोल्हू कैसा ये तरक्की का,
निकला है खाली बस तेल किसानों के |
खेत कभी घर छीन लिये हैं यूँ कहके
होंगे बंगला गाड़ी रेल किसानों के |
खेल रहे शतरंज सदन में नेता जी,
बेटा हैं सरहद की गैल किसानों के |

मृदुल कुमार सिंह
महाराजपुर, अलीगढ़

साहित्य रत्न जुलाई2023